प्रातः क्लास 24/9/68 ओमशान्ति पिताश्री शिवबाबा याद है?

ओमशान्ति। बच्चों को योग सिखलाया। और सभी जगह सभी आपे ही सीखते हैं। सिखलाने वाला बाप नहीं होता। आपे ही सिखलाते हैं एक दो को। यहाँ तो बाप बैठ बच्चों को सिखलाते हैं। रात–दिन का फर्क है। वहाँ तो बहुत मित्र–सम्बन्धी, धंधा आदि याद आते रहते हैं। इतना याद नहीं कर सकते। इसलिए देही–अभिमानी बहुत बहुत मुश्किल बनते हैं। यहाँ तो देही–अभिमानी तुमको बहुत जल्दी बनना चाहिए; परन्तु बहुत हैं जिनको कुछ भी पता नहीं है शिवबाबा हमारी सर्विस कर रहे हैं। हमको कहते हैं अपन को आत्मा समझो बाप को याद करो। जो बाप इसमें विराजमान है, यहाँ विराजमान है उनको याद करना पड़ता है। बहुत बच्चे हैं जिनको यह निश्चय ही नहीं है कि शिवबाबा ब्रह्मा तन में आकर हमको सिखला रहे हैं। जैसे और लोग कहते हैं हम कैसे निश्चय करें, ऐसे यहाँ भी हैं। अगर पूरा निश्चय होता तो बहुत प्यार से बाप को याद करते; क्योंकि सारे विश्व को पावन बनाना है ना। योग में भी कमी है तो ज्ञान में भी कमी है। सुनते तो हैं; परन्तु धारणा नहीं होती। धारण अगर हो तो फिर औरों को भी धारण करावे।

बाबा ने समझाया था वह कॉन्फ्रेन्स आदि करते रहते हैं, विश्व में शान्ति चाहते हैं; परन्तु विश्व में शांति कब थी, किस प्रकार की हुई थी वह कुछ भी नहीं जानते। किस प्रकार की शान्ति थी, वही चाहिए ना। यह तो तुम बच्चे ही जानते हो। विश्व में सुख–शान्ति की स्थापना अब हो रही है। बाप आया हुआ है। जैसे कि यह दिलवाला मंदिर है। आदिदेव भी है और ऊपर में विश्व में शान्ति का नज़ारा भी है। कहाँ भी कॉनफ्रेन्स आदि में तुमको बुलाते हैं तो तुम पूछो विश्व में शान्ति किस प्रकार की चाहिए। इन ल0ना0 के राज्य में विश्व में शान्ति थी ना। वह तो दिलवाला मंदिर में पूरा यादगार है। विश्व में शान्ति का सिम्पुल तो चाहिए ना। ल0ना0 के चित्र से भी समझते नहीं। पत्थर बुद्धि है ना। तो उन्हों को बताना चाहिए हम बता सकते हैं विश्व में शान्ति का सिम्पुल एक तो यह ल0ना0 है। और फिर इन्हों की राजधानी भी देखने चाहते हो तो वह भी दिलवाला मंदिर में चलकर देखो। माडल ही दिखाया जावेगा ना। वह चलकर आबू में देखो। मंदिर बनाने वाले खुद नहीं जानते। जिन्होंने ही बैठ यह यादगार बनाया है। जिसका दिलवाला मंदिर नाम रख दिया है। आदिदेव को भी बिठाया है। ऊपर में स्वर्ग भी दिखाया है। जैसे वह जड़ है वैसे तुम चैतन्य हो। इनको चैतन्य दिलवाला नाम लिख सकते हो, परन्तु पता नहीं कितनी भीड़ हो जाये। मनुष्य ही मुँझ जाये यह फिर क्या है। समझने में बहुत मेहनत लगती है। बहुत बच्चे भी नहीं समझते हैं। भल दर पर पास में बैठे हैं, समझते कुछ भी नहीं। जैसे कि भैंस बुद्धि है। अभी जैसे बम्बई में प्रदर्शनी हो रही है। अनेक प्रकार के मनुष्य जाते हैं ना। ढेर मठ–पंथ है। वैष्णव धर्म वाले भी हैं। वैष्णवधर्म का भी अर्थ थोड़े ही समझते हैं। कृष्ण की बादशाही कहाँ है, जानते ही नहीं। कृष्ण की राजाई को ही स्वर्ग वैकुण्ठ कहा जाता है; परन्तु पत्थर बुद्धि मनुष्य मुश्किल समझते हैं। बाबा ने कहा था जहाँ बुलावा हो वहाँ जाकर तुम समझाओ विश्व में शान्ति कब थी। यह तो आबू ही ऊँच ते ऊँच तीर्थ है; क्योंकि यहाँ ही बाप विश्व की सद्गति करते हैं आबू पहाड़ पर। उनका सिम्पुल देखना हो तो चलकर दिलवाला मंदिर देखो। विश्व में शान्ति कैसे स्थापन की थी उनका सिम्पुल है। सुनकर बहुत खुश होंगे। तुम कहेंगे यह प्रजापिता ब्रह्मा तो हमारा बाप है आदि देव। तुम समझाते हो तो भी समझते नहीं। कहते हैं ब्रह्माकुमारियाँ पता नहीं क्या कहती हैं। तुम जानते हो नम्बरवन बेवकूफ हैं। वह फिर तुमको बेवकूफ समझते हैं। तो अभी तुम बच्चों को आबू की बहुत ऊँची महिमा कर समझाना है। आबू है बड़े ते बड़ा तीर्थ। बम्बई में भी समझा सकते हैं। आबू पहाड़ी बड़े ते बड़ा तीर्थ है; क्योंकि परमपिता ने आबु में आकर स्वर्ग की स्थापना की है। कैसे स्वर्ग की रचना रचते हैं वह स्वर्ग का और आदि देव का मॉडल भी आबू में है। जिसको कोई भी मनुष्य नहीं समझते हैं। हम अभी जानते हैं तुम नहीं जानते हो इसलिए हम तुमको समझाते हैं। पहले तो पूछो कि तुम विश्व में शान्ति किस प्रकार के चाहते हो। कब देखा है? विश्व में शान्ति तो इनके राज्य में थी। एक ही

आदि सनातन देवी–देवता धर्म था। इनकी डिनायस्टी का राज्य था। चलो तो हम इनके राजधानी का मॉडल तुमको आबू में दिखावे। यह तो है पुरानी पतित दुनिया। अभी इन्द्रा गई है पुरानी दुनिया का सैर करने। नई दुनिया का तो नहीं कहेंगे ना। नई दुनिया का मॉडल तो यहाँ है। नई दुनिया अब स्थापन हो रही है। तुम जानते हो तब तो बतलाते हो। सभी नहीं जानते। न बतलाते हैं। न समझ में ही आता है। बात है बहुत सहज। ऊपर में स्वर्ग की राजधानी खड़ी है। नीचे आदि देव बैठा है, जिसको एडम भी कहते हैं। वह है ग्रेट2 ग्रैन्ड फादर। ऐसे तुम महिमा सुनावेंगे तो सुन कर खुश होंगे। है भी बरोबर एक्युरेट। जैनी लोग भी खुश होंगे। है भी बरोबर एक्युरेट। बम्बई में भी समझा सकते हैं। तुम कृष्ण की महिमा करते हो; परन्तु तुम जानते कुछ भी नहीं हो। कृष्ण तो वैकुण्ठ का महाराजा विश्व का मालिक था। उसका तुम मॉडल देखना चाहते हो तो चलो आबू में तुमको वैकुण्ठ का मॉडल दिखावे। कैसे पुरुषोत्तम संगमयुग पर राजयोग सीखते हैं जिससे फिर वैकुण्ठ के मालिक बने हैं वह भी मॉडल दिखावे। संगमयुग की तपस्या भी दिखावेंगे। प्रैक्टिकल जो हुआ था वह यादगार दिखावे। शिवबाबा जिसने ल0ना0 का राज्य स्थापन किया उनका भी चित्र है। अम्बा का भी मंदिर है। अम्बा को कोई दस बीस भुजाएँ नहीं हैं। भुजाएँ तो दो ही होते हैं। तुम आओ तो तुम हम दिखावे। वैकुण्ठ भी आबू में दिखावे। आबू में ही बाप आकर सारे विश्व को हेविन बनाया है। सद्गति दी है। तो आबू सबसे बड़ा तीर्थ हुआ। सभी धर्म वालों की सद्गति करनी है वह करने वाला एक बाप ही है। उनका यादगार चलो आबू में तो हम दिखावे। आबू की तुम बहुत महिमा कर सकते हो। यहाँ भी प्रदर्शनी करो। प्रबन्ध करो। बाप डायरेक्शन देते हैं। अच्छा शोभावाला मकान हो। जो मनुष्य आकर अच्छी रीत देखे। शो अच्छा होगा। तो आवेंगे मनुष्य। तुम समझाते भी हो कि विश्व में शान्ति कैसे स्थापन हो रही है तुमको सभी यादगार दिखावे। क्रिश्चियन लोग भी चाहते हैं प्राचीन भारत का राजयोग किसने सिखाया, क्या चीज़ थी। बोलो, चलो हम आबू में दिखावें। वैकुण्ठ भी पूरा एक्युरेट बनाया है ऊपर छत में। तुम ऐसा नहीं बना सकते हो। तो यह अच्छी रीति बताना है। टूयरेस्ट जो धक्का खाते रहते हैं वह भी आकर समझे। तुम्हारा आबू का नाम बाला हो गया तो बहुत आवेंगे। आबू बहुत मशहुर हो जावेगा। तुम्हारे मदद के सिवाय एक ईंच भी बन न सके। कहाँ भी निमंत्रण मिलते हैं विश्व में शान्ति कैसे हो। तो कहना चाहिए वह कब थी? कैसे थी चलो तो हम समझावे। माडल आदि सब दिखानी है। ऐसा माडल और कहाँ भी नहीं है। यह आबू ही सबसे बड़ा ते बड़ा तीर्थ है। जिसमें बाप ने आकर विश्व में शांति, सबकी सद्गति की है। यह बातें और कोई नहीं जानते। तुम्हारे में भी नम्बरवार हैं। भल बड़े2 महारथी म्युजियम सम्भालने वाले हैं; परन्तु कुछ भी नहीं समझते हैं। ठीक रीति किसको समझाते हैं वा नहीं बाबा रीड तो करते हैं ना। बाबा सभी कुछ समझते हैं। जो भी जहाँ भी हैं उनको समझाते हैं, कौन2 कैसे पुरुषार्थ कर रहे हैं, क्या पद पावेंगे। इस समय अगर मर पड़े तो कुछ भी पा न सके। याद की यात्रा की मेहनत वह समझ नहीं सकते हैं। बाप रोज़2 नई बात समझाते हैं, ऐसे2 समझाओ, ले आओ। यहाँ तो यादगार कायम है। बाप कहते हैं मैं भी यहाँ हूँ। आदिदेव भी यहाँ है। आबू की बहुत भारी महिमा हो जावेगी। आबू पता नहीं क्या हो जावेगा। जैसे देखो कुरुक्षेत्र को अच्छा बनाने करोड़ पैसे उड़ाते रहते हैं। कितने ढेर आदमी वहाँ जाकर इकट्ठे हो गये हैं। जैसे रीढ़ बकरियाँ वहाँ जाकर ढेर के ढेर जाकर इकट्ठे हुए हैं। इतनी बदबुएँ गंदगी होती है बात मत पूछो। जैसे जनावरों मिसल हैं। कितनी भीड़ लगी पड़ी है। समाचार था ना भजन मंडली की एक सारी बस नदी में डूब पड़ी। यह सभी दुख है ना। अकाले मृत्यु होती रहती है। वहाँ तो ऐसे कुछ होता नहीं। यह सभी बा(त) तुम ही समझा सकते हो। बात–चीत करने वाला बड़ा सेन्सीबुल चाहिए। बाप ज्ञान का पॉम्प कर रहे हैं। बुद्धि में बिठाये रहे हैं। दुनिया थोड़े ही इन बात(ों) को जानती है। वह समझते हैं नई दुनिया का सैर करने गई है। हम कहते हैं पुरानी दुनिया का सैर करने गई है। जो पुरानी दुनिया अब गई कि गई। वह तो समझते हैं अभी 40 हजार वर्ष पड़े हैं। तुम तो बतलाते हो सारा कल्प की 5000 वर्ष का है। पुरानी दुनिया का तो मौत सा .....

खड़ा है। इसको कहा जाता है घोर–अंधियारा। सभी कुम्भकरण के नींद में सोये पड़े हैं। कुम्भकरण आधा कल्प सोता था आधा कल्प जागता था। तुम भी कुम्भकरण थे। यह खेल बड़ा ही वन्डरफुल है। इन बातों को सभी थोड़े ही समझ सकते हैं। कई तो ऐसे ही भावना में आ जाते हैं। सुनते हैं यह सभी जा रहे हैं। तो चल पड़ते हैं। उनको बुलाते हैं हम शिवबाबा के पास जाते हैं, शिवबाबा ही स्वर्ग की स्थापना कर रहे हैं। उस बेहद के बाप को याद करने से बेहद का वरसा मिलता है। बस। वह भी कह देते हैं शिवबाबा हम आपके बच्चे हैं। आप से वरसा जरूर लेंगे। बस। बेड़ा पार है। भावना का भाड़ा देखो कितना मिलता है। भक्तिमार्ग में तो है बेहद के बाप से बेहद का वरसा। वह है भावना का अल्पकाल का सुख का भाड़ा। यहाँ तुमको 21 जन्मों लिए भावना का भाड़ा मिलता है। बाकी सा0 आदि में कुछ है नहीं। कोई कहते हैं सा0 हो तो बाबा समझ जाते हैं कुछ भी समझा नहीं है। सा0 करना है तो जाकर नवधा भक्ति में करो। उससे कुछ मिलता नहीं है। करके दूसरे जन्म में कुछ अच्छा बन जावेंगे। शैतानी कोई होगा तो जाकर शैतान बनेगा। यह तो बात ही न्यारी है। यह पुरानी दुनिया बदल रही है। बाप है ही दुनिया को बदलने वाला। यादगार खड़ा है ना। बहुत ही पुराना मंदिर है। कुछ टूटता करता है तो मरम्मत कराते रहते हैं; परन्तु वह शोभा तो कम हो जाती है। यह तो सभी विनाशी चीज़ें हैं ना। तो बाप समझाते हैं बच्चे एक तो अपना कल्याण के लिए अपन को आत्मा समझ बाप को याद करो तो तुम्हारे विकर्म विनाश होंगे। पढ़ाई की बात है। बाकी यह तो मथुरा में मधुबन कुजंगली आदि बैठ बनाया है वह कुछ भी है नहीं। न कोई गोप–गोपियों का खेल है। यह सभी हैं नॉनसेन्स बुद्धि की बातें; परन्तु मनुष्य अपन को कोई पत्थर बुद्धि समझते थोड़े ही हैं। अपनी बुद्धि की कितनी सराहना करते रहते हैं। कोई राजा को 50 मिनिस्टर हो तो उनको जरूर बुद्धू कहेंगे ना। अभी तो हजारों मिनिस्टर हैं। मिनिस्टर का ही जैसे राज्य हो गया है। समझाने में बड़ी मेहनत करनी पड़ती है। टाइम तो पड़ा है ना। एक–एक प्वाइंट अच्छी रीति बैठ समझाओ। कॉनफ्रेन्स आदि में चाहिए योग वाला। तलवार में जौहर न होगा किसको तीर लगेगा नहीं। तब बाबा भी कहते हैं अजन देरी है। अभी ही मान ले कि बरोबर परमात्मा सर्वव्यापी नहीं है। तो सभी की मोचरे आकर पड़े; परन्तु अभी वह टाइम नहीं है। अभी तो तुम्ही सुधरे नहीं हो। तो औरों को क्या सुधारेंगे। एक बात मुख्य समझ जाये कि राजयोग बाप ने सिखाया था जो इस समय सिखला रहे हैं। नाम उसके बदली डाल दिया है जो कि अभी बिल्कुल पतित सांवरा है। कितनी बड़ी भूल है। बाप समझाते हैं यह झूठे शास्त्र आदि पढ़ते2 तुम्हारी बेरी ही डूब गई है। बाप और गुरुओं ने बेरी बोरी। बाकी शरीर तो शरीर निर्वाह लिए पढ़ाते हैं। कहा भी जाता है पढ़ाई सोर्स ऑफ इनकम है। यह भी पढ़ाई है। बाप कहते हैं मैं मनुष्य को देवता बनाने पढ़ाने आता हूँ। इसमें पवित्र भी बनना है। दैवीगुण भी धारण करनी है। नम्बरवार तो होते ही हैं। जो भी सेन्टर्स हैं सभी नम्बरवार हैं। यह सारी राजधानी स्थापन हो रही है। बोलो स्वर्ग कहा जाता है सतयुग को; परन्तु वहाँ का राज्य कैसे चलता है देवताओं का झुण्ड देखना हो तो चलो आबू। और कोई ऐसे जगह है नहीं। जहाँ ऐसे छत में राजाई हो। भल अजमेर में स्वर्ग का मॉडल है; परन्तु और बात है। आदिदेव भी यहाँ है ना। सतयुग किसने और कैसे स्थापन किया यह तो एक्युरेट यादगार है। अभी हम चैतन्य दिलवाला नाम लिख नहीं सकते हैं। जब मनुष्य खुद समझ जायें तो आपे ही कहेंगे तुम लिखो। अभी नहीं। अभी तो देखो थोड़े ही बात में क्या कर देते हैं। क्रोध बहुत होते हैं। देह–अभिमान है ना। देही–अभिमानी तो कोई हो न सके। सिवाय तुम बच्चों के। पुरुषार्थ करना है। ऐसे नहीं कि जो नसीब में होगा। पुरुषार्थी ऐसे कभी नहीं कहेंगे। वह तो पुरुषार्थ करते रहेंगे। फिर जब फेल होते हैं तो कहते हैं तकदीर में जो था। अच्छा मीठे2 सिकीलधे रूहानी बच्चों को रूहानी बाप व दादा का यादप्यार गुडमॉर्निंग। रूहानी बच्चों को रूहानी बाप का नमस्ते।

शिवबाबा और वरसा याद है?